मकरसंक्रांति का अलौकिक रहस्य समझ कर त्योहार को मनाए

हिंदू धर्मके प्रमुख त्योहारों में मकरसंक्रांति पर्व का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस दिन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और उत्तर की ओर प्रयाण करता है, इसलिए उसे मकरसंक्रांति या उत्तरायण कहा जाता है। पूरे भारत में यह त्योहार अलग-अलग नामों से और अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक और केरल में '**संक्रांति**'; तमिलनाडु में '**पोंगल**'; पंजाब हरियाणा में '**लोहड़ी**'; असम में' '**भोगाली बिहू**''; उत्तर प्रदेश में '**खिचड़ी**'; गुजरात में '**उतरण**'; उत्तराखंड में '**उत्तरायण**' के रूप में मनाया जाता है।

खासकर गुजरात में इस त्योहार के दौरान पतंग उड़ाने की महिमा है। सुबह-सुबह लोग छत पे पहुंचते हैं और पतंगबाजी का आनंद लेते हैं। आकाश रंगबेरंगी पतंगों से आच्छादित हो जाता है। छतों पर लाऊड स्पीकर का शोर वातावरण में गूंज उठता है। कुछ लोगों को पतंग पकड़ने में ज्यादा मजा आता है। आजकल शाम को छत पर हवाई तुक्कल को पतंग के साथ आकाश में छोडते है| फिर पटाके जलाकर आतिशबाज़ी का आनंद लेते है।

उत्तरायण एक पवित्र और पुण्य पर्व है क्योंकि यह माना जाता है कि इस त्योहार में देवताओं का आयन होता है। इस त्योहार से शुभ कार्यों की शुरुआत होती है। माना जाता है कि उत्तरायण में मृत्यु को प्राप्त किया तो मोक्ष मील जाता है। इस दिन, सूर्य धन राशि चक्र से बाहर निकल कर मकर राशि में प्रवेश करता है। मकर राशि शनि की राशि है। शनि सूर्यके पुत्र है। अर्थात पिता पुत्र की राशि में प्रवेश करता है। यही कारण है कि यह दिन शुभ माना जाता है। हम सभी जानते हैं कि सूर्य एक स्थूल तारा है और शनि सौर मण्डल का एक भौतिक ग्रह है। तो इस घटना को स्थूल रूपसे न ले कर उसके आध्यात्मिक रहस्य को समझ कर इस त्योहार को मनाया जाए तो अधिक लाभकारक और सार्थक होगा।

सूर्य, शिव परमात्मा का प्रतीक है, जो ज्ञानसूर्य है, ज्योति स्वरूप है। शनि प्रकाश बिंदु के रूप में मानव आत्मा का प्रतीक है। सूर्य पुत्र शनि की तरह हम सभी, प्रकाश बिंदु स्वरूप, मानव आत्मा**ए** प्रकाश स्वरूप परमात्मा शिव की संतान हैं। पुत्र शनि की राशी में सूर्य का प्रवेश करने का अर्थ है मानव आत्मा के जीवन में उसकी मुक्ति के लिए ज्ञानसूर्य परमात्मा का प्रवेश, जो सदैव कल्याणकारी है। परमात्मा का मानव जीवन में प्रवेश न केवल शुभ या मंगलकारी है, बल्कि यह माना जाता है कि आत्मा अपने खोए हुए देवत्व को पुनः प्राप्त करती है। इसलिए उत्तरायण में देवताओं का अयन होता है ऐसा माना जाता है। उत्तरायण की अवधि को देवताओं का दिन माना जाता है और

दक्षिणायण अवधि को देवताओं की रात मानी जाती है। इन दिनों में अगर हम आत्माए ज्योतिबिंदु स्वरूप शिव परमात्मा को याद करेंगे तो सही मायने में मकरसक्रांति मनाना होगा और हम देवपद को प्राप्त कर सकते है।

मकरसक्रांति के दिन तिल और गुड के लड्डू खाने की विशेष महिमा है| तिल और गुड़ का भी रहस्य है। तिल ऊपर से काला होता है अंदर की ओर सफ़ेद मीठी-महक वाला होता है। यह तिल हमें यह संदेश देता है कि बाहर चाहे हमारी शारीरिक बनावट कैसी भी हो, लेकिन अंदर हम तिल की तरह उजले और पवित्र रहेंगे तो सभी को पसंद आएंगे। जब हम तिल को मसलते हैं तो बाहर का काला छिलका निकल जाता है और तिल सफेद हो जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान के परिपेक्ष में हम सभी अतिसूक्ष्म आत्माए तिल समान है जो विकारो के प्रभाव में काली और तमोगुणी बन गई है। आध्यात्मिक ज्ञान और योग के अभ्यास से, जो कि तिल रगड़ने के बराबर है, हमारी आत्मा सफ़ेद तिल के समान शुद्ध और पवित्र बन जाएगी। गुड़ खाने का रहस्य यह है कि हमें गुड़ के समान मीठा और मधुर बनना चाहिए। इसके अलावा, तिल बहुत ही छोटा होता है तो हमें भी अहंकार से मुक्त हो कर तिल समान छोटे बनकर रहना चाहिए। तब जाकर हम महान बन पाएंगे। जब हम सोचते हैं कि मैं बड़ा हूं, कुछ विशेष हूं तब से हम गिरने लगते हैं। अहंकार का नशा, एक बड़ा भ्रम है।

उतरण के दिन हम बहुत पतंगबाजी करते हैं और पतंग उडाने का और पतंग काटने का आनंद लेते है। लेकिन हम सभी जानते हैं कि हमारा मन भी एक पतंग की तरह है, जो हमेशा उड़ता रहेता है। तो आज के दिन स्थूल पतंग के साथ साथ हमें हमारे मन रूपी पतंग को भी उड़ा कर परमात्मा से जोड़ना चाहिए और परमानंद वा अतींद्रिय सुख का अनुभव करना चाहिए। जिस तरह हम पतंग काटने का आनंद लेते हैं वैसे इस पवित्र दिन पर हम हमारे नकारात्मक विचार और विकारो को काटेंगे तो हम जीवन का आनंद हमेशा के लिए ले सकते हैं।

मकर संक्रांति के दिन तीर्थ स्थानों में पवित्र नदीयों के संगम पर स्नान करने का भी बहुत महत्व है। यदि हम वर्तमान संगमयुग के समय परमात्मा शिव द्वारा प्रदान किए जा रहे दिव्यज्ञान रूपी नदी में भी ज्ञानस्नान करते हैं, तो हम अपनी आत्मा को पापों से मुक्त कर सकेंगे और खोए हुए देवत्व को पुन: प्राप्त कर सकेंगे।

इस दिन दान करने की भी बहुत महिमा है। लेकिन स्थूल वस्तुओं के दान के साथ हम आज के दिन परमात्मा ने दिए ज्ञाहुएन का भी दान करके किसीका जीवन बनाएँगे तो ये पवित्र पर्व सही मायने मनाया, एसा माना जाएगा।

तो चलिए हम सभी इस त्यौहार को इसके सही अर्थ को समझकर मनाए। १६५ से अधिक देशों में कार्यरत अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थान प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में भीं मकरसक्रांति को इस तरह अलौकिक रीती से मनाया जाता है।

------000000------

ब्रह्माकुमार प्रफुल्लचंद्र

सानडिएगो, यु एस ए

(मो) +91 98258 92710